ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 366-368
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

डॉ. दयानंद 'बटोही' कृत–'सुरंग' कहानी में 'अधिकार–बोध' एवं 'दलित चेतना' : एक अध्ययन

डॉ0 मुकुंद रविदास

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी–विभाग, पी.के राय मेमोरियल कॉलेज, धनबाद (झारखण्ड), भारत

भारतीय समाज में सदियों से दलित वर्ग शोषित,वंचित,पीड़ित, उपेक्षित ओर प्रताड़ना का शिकार होता रहा है चाहे वह धार्मिक,सामाजिक, शैक्षणिक क्षेत्र हो या अन्य । मानवीय एवं सामाजिक जीवन में सभी मानवों को बेहतर एवं स्वतंत्र जीवन जीने का अधिकार है परन्तु जब उसे उसके अधिकारों से ही वंचित किया जाता है तब वह अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष की ओर अग्रसर होता है । डॉ.दयानंद 'बटोही' जी की कहानी 'सुरंग' भी अपने अधिकारों को प्राप्त करने वाली अधिकार बोध एवं दलित चेतना को जागृत करने वाली एक ऐसी ही कहानी है जो दलित कहानियों की श्रृंखला में 'मील का पत्थर' है यह कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।साहित्य– सर्जक प्राध्यापक के रूप में पढ़ना और पढ़ाना को आसान माना जाता है जबकि लेखन कार्य को उतना ही कठिन । प्राध्यापक तो बहुत लोग होते हैं परंतु प्राध्यापकों में बहुत कम प्राध्यापक होते है जो पढ़ाने के साथ– साथ साहित्य–सृजन कार्य भी करते हैं । साहित्य–सृजन का कार्य वही कर सकता है जो वास्तव में साधक हो क्योंकि लिखना एक बहुत बड़ी साधना है ।

डॉ. 'बटोही' जी एक प्राध्यापक के साथ–साथ सकुशल साहित्य के साधक भी हैं । उनके द्वारा सृजित –साहित्य इस बात के ज्वलंत उदाहरण है – कफन चोर, यातना की आँखें, सुरंग, साहित्य ओर सामाजिक क्रांति, माथा दर्द, महामानव डॉ. आंबेडकर, साहित्य के आईने में,नई पीढ़ी नए कर्णधार आदि इनकी चर्चित रचनाएं हैं ।

कर्मठता और लगनशीलता– डॉ. दयानंद 'बटोही' जी अध्ययनशील, कर्मठ एवं व्यवहार कुशल, मृदुभाषी शिक्षक रहे हैं । इन्होंने अपने अध्यापकीय जीवन–यात्रा बोकारो जिला के चंद्रपुरा से शुरू किया और डीवी सी से हिंदी अधिकारी बन कर सेवानिवृत हुए । डॉ.'बटोही'जी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है –उनकी कार्यकुशलता,कर्मठता और किसी कार्य को करने के प्रति लगनशीलता। हम कह सकते हैं कि वे अपने कार्य के पक्के धूनी व्यक्ति हैं ।

विनम्रता और निरहंकारिता – इतने बड़े साहित्यकार एवं उच्च पद पर रहने के बाबजूद उनके मन एवं व्यवहार में पद का कोई अहंकार जैसी चीज देखने को नहीं मिलता है ।

हर दिल अजीज मित्र – किसी ने ठीक ही कहा है कि–" मित्र बनाना बहुत आसान है लेकिन उसे निभाना उतनी ही कठिन"। डॉ. बटोही जी अपनी मित्रता को पूरी निष्ठा से निभाते है यही कारण है कि सेवानिवृत्ति के एक लंबी अवधि गुजरने के बाद भी इनके साहित्यिक शुभचिंतकों की एक लंबी कतार आज भी है जिनमें प्रमुख है – डॉ.श्यौराज सिंह 'बेचैन', डॉ. सुशीलाटाक भौरे, डॉ.जयप्रकाश 'कर्दम',डॉ.पूरनसिंह,डॉ.एन सिंह,डॉ.रजत रानी 'मीनू',डॉ.अजययतिश,विपिन बिहारी, प्रहलाद चंद्र दास, कर्मानंद आर्य, मुसाफिर बैठा,शिरोमणि महतो आदि ।

दलित साहित्य के क्षेत्र में एक छोटी सी जगह चंद्रपुरा में रहते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले डॉ.'बटोही' जी से वरीय संवाददाता प्रमोद कुमार सिन्हा जी द्वारा लिए गए एक साक्षात्कार में 'बटोही' जी कहते है कि–"साहित्यकार साहित्य और समाज के बीच मानवीय प्रवृति पैदा करने के लिए पूरी कोशिश करता है । वास्तव में साहित्यकार किसी जाति,धर्म,प्रदेश तथा भाषा से जुड़ा नहीं रह सकता है वह इन चीजों को लांघकर आगे बढ़ जाता है।पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर किसी भी रचना को अंजाम नहीं दिया जा सकता है। जिस ग्रन्थ में समाष्टिगत हित चिंतन प्राप्त होता है वहीं साहित्य है ।"

डॉ.बटोही जी की कहानी 'सुरंग' पुस्तक समीक्षा में डॉ.श्यौराज सिंह 'बैचेन' लिखते है कि दृ "इनकी कहानी 'सुरंग' वर्तमान कोरे आदर्शों की कम ओर कड़वे सत्य और यथार्थ की अभिव्यक्ति की आवश्यकता के साथ साहित्य जीवन की दृष्टि से देखने के कर्तव्य की बात करता है ।"

दलित चेतना के विकास में योगदान देने वाली अनेक दलित कहानीकारों की कहानियाँ एवं कहानी–संग्रह प्रकाशित हो चुकी है और वर्तमान में हो भी रही है । उनमें से कुछेक कहानी–संग्रहों के नाम इस प्रकार है– समकालीन दलित कहानियाँ – संपादक– डॉ. कुसुम वियोगी,हैरी कब आएगा–सूरजपाल चौहान, पुटूस के फूल – प्रहलाद चंद दास ,अंधेरी बस्ती–

अनुरूपी लेखक

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ओमप्रकाश वाल्मीकि, मेरा सफर मेरी मंजिल– डीआरजाटव, संतृप्त– सूरजपाल चौहान,वचनवद्ध–डॉ.सतीश, दलित कहानी विशेषांक,युद्धरत आम आदमी– संपादित – रमणिका गुप्ता, सलाम– ओमप्रकाश वाल्मीकि, आदि अनेकों दलित कहानी–संग्रह प्रकाशित है और वर्तमान में भी प्रकाशित किए जा रहे हैं।

व्यक्तित्व और कृतित्व दृ डॉ.दयानंद'बटोही' जी का जन्म एक साधारण दलित किसान परिवार में 01 अक्टूबर 1942 ईस्वी को जिला– नवादा (पूर्व में गया) राज्य – बिहार ननिहाल में हुआ था । इसलिए इनकी प्रारंभिक पढ़ाई भी ननिहाल के गांव के प्राइमरी स्कूल से ही हुई थी । इनके पिताजी मिडिल स्कूल में शिक्षक थे । डॉ. 'बटोही' जी 1954 ई. में इलाहाबाद के 'ईश्वर शरण आश्रम'(हरिजन आश्रम) में रहते हुए सातवीं कक्षा में नामांकन करवा कर आगे की पढ़ाई करने लगे । 1958 ई. में मैट्रिक , 1962 ई. इंटर और 1964 ई. में स्नातक की पढ़ाई इलाहाबाद विश्वविद्यालय के क्रिश्चियन कॉलेज से पूरा कर स्नातकोत्तर हिंदी की पढ़ाई भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूरा किए थे । डॉ.'बटोही' जी बचपन से ही मेघावी व कुशाग्र बुद्धि के थे । शिक्षक पिता के संस्कारों का प्रभाव भी था जिस कारण बचपन से ही इन्हें साहित्य के प्रति रुचि थी । जब वे इंटरमीडिएट के छात्र थे तब इलाहाबाद से एक पत्रिका प्रकाशित होती थी 'आश्रम–संदेश' उस पत्रिका में इनकी एक कहानी प्रकाशित हुई थी– 'सूर्य–किरण'–1962ई. ।जून 1967 ई. से लेकर अब तक राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं छपती रही हैं । इन्होंने कहानी के साथ–साथ कविता,आलेख ,निबंध एवं संस्मरण भी लिखा है ।इनकी 'सुरंग'कहानी विभिन्न विश्वविद्यालय में आज भी पढ़ाया जा रहा है । डॉ.बटोही जी स्वभाव से मिलनसार, व्यवहार कुशल, मृदुभाषी व संघर्षशील साहित्यकार हैं । हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वानों में डॉ.नामवर सिंह, डॉ.मैनेजर पांडे, डॉ.रमणिका गुप्ता, दूधनाथ सिंह,अर्चना वर्मा, डॉ.नीलम, डॉ.एन सिंह, डॉ.जयप्रकाश कर्दम, डॉ.ओमप्रकाश वाल्मीकि, डॉ.सुशीलाटाक भौंरे,प्रहलाद चंद्र दास,डॉ. पूरन सिंह,मोहन दास, डॉ.श्यौराज सिंह 'बैचेन' ,डॉ.रजत रानी 'मीनू' सहित अनेकों साहित्यकारों के साथ इनका बेहतर संबंध है और कई एक के साथ तो साहित्यिक मंच पर भी अपने विचारों को साझा किए हैं । डॉ.'बटोही' जी को अपने विद्यार्थी जीवन में जिन विद्वान गुरुओं से शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था उनमें से हैं– डॉ.रामकुमार वर्मा डॉ. हरदेव बाहरी,डॉ. रघुवंश, डॉ.जगदीश गुप्त, डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय आदि ।

'सुरंग' कहानी मैं अधिकार बोध– डॉ.'बटोही' जी चूंकि स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त विधीयर्थी थे जिन्हें अपने मौलिक अधिकारों की जानकारी थी ।स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्ति के बाद जब वे पीएच–डी करने के लिए विभागीय प्रक्रियाओं से गुजरते है ओर तब उन्हें दलित होने के कारण पीएच–डी नहीं करने दिया जाता है , तब वे अपने अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष करते है ओर अंततः उन्हें अनुमति मिल जाती है।इस कहानी में स्वर्ण शिक्षक द्वारा एक दलित को पीएच–डी नहीं करने देने की सोंच ओर एक दलित छात्र द्वारा अपने अधिकार को पाने के बीच का यथार्थ चित्रण को पढ़कर विशेषकर दलितों मैं अपने अधिकार को प्राप्त करने की बोध कराती है । 'अधिकार–बोध' से तात्पर्य भी यहाँ इसी अर्थ मैं है कि अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना,आत्मविश्वास को बनाए रखना ओर अन्याय का विरोध करना।कहानी मैं एक समय लेखक अपने को अकेला महसूस करता है ।पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत है दृ"इस समय मैं अपने को अकेला समझ रहा हूँ फिर भी दम नहीं तोड़ा हूँ ।तोड़ूँ भी कैसे ?।"हरिजन हैं आप ? जी,हाँ । मैं कह देता हूँ आप लोगों को क्या लग रहा हूँ । मैंने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया , देना मुनासीब समझा ।डॉ। साहब आप भूल जाएं कि मैं हरिजन हूँ,गुलाम हूँ ।पराधीनता की जंजीर टुटनी है ।" ऐसा लगता है यहाँ लेखक चुप हो जाएगा परंतु कहानी मैं उसे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता हुआ दिखाया गया ।यहीं इस कहानी मैं अधिकार का बोध करा जाती है ।

'सुरंग'मैंदलित चेतना–'दलित' शब्द का अर्थ शब्दकोशों मैं इस प्रकार से दिया गया है दबाया गया, शोषित, उत्पीड़ित, अपमानित, वंचित, उपेक्षित, दमित, बहिष्कृत आदि । 'दलित' वर्तमान मैं प्रायः चांडाल, मेहतर,हरिजन,गिरिजन,अछूत जातियों के लिए ये सभी शब्द रूढ हो गए हैं ।सर्वमान्य ओर वस्तु स्थिति के अनुसार संविधान मैं इन्हें 'अनुसूचित जाति और जनजाति' की श्रेणी मैं वर्गीकृत किया गया है ।

अतः यह कहा जा सकता है कि 'दलित–चेतना' से तात्पर्य है –सामाजिक,सांस्कृतिक,राजनीतिक ओर शैक्षणिक जागरूकता । 'चेतना' का सामान्य अर्थ ही होता है–जागरूकता ।स्वाभिमान ओर आत्म–सम्मान ओर अपने अधिकारों,सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा से है । साहित्य का काम समाज की संवेदनाओं को झकझोर कर उसमें प्रगति चेतना का संचार करना तथा उसे एक सही दिशा देना है । दलित कहानियों मेंसमान्यतया जातिगत प्रश्नों,शैक्षिक वंचनाओं,आर्थिक शोषण,धार्मिक बहिष्कार, ,सांस्कृतिक ओर राजनीतिक अज्ञानता के विरुद्ध अभियान है । 'सुरंग' कहानी भी एक ऐसी ही कहानी

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

है जिसमें दलितों की चेतना को जागृत व दिशा देने वाली हैं । 'सुरंग' कहानी मैं भी दलित शोधार्थी पीएच–डी करने की सारी आहर्ता रखता है परंतु जातीय दंश का शिकार हो जाता है ।कहानी मैं दृ 'साक्षात्कार सात बजे सुबह से चल रहा है। इस समय दस ब्याज कर बीस मिनट हुए हैं ।मुझसे पहले कई लड़के एवं लड़कियों का इंटेरव्यूह हो चुका है ।" यूनियन सेकेरेट्री से जब डॉ.विष्णु कहते हैं दृ रिसर्च मैं करा देंगे । अधिकार की मांग वह क्यों करता है,वह तो हरिजन होकर पढे–लिखे जैसी बात करता है ।'

निष्कर्ष– भारतीय समाज मैं जन्मना जाति–पाँत,छूआ–छूत एक कोढ़ के समान हो गया है जो समाज को अंदर से खोखला करताजा रहा है ओर यह गाँव–समाज से निकल कर शैक्षणिक सहित विभिन्न संस्थानों मैं भी कायम है ।इसी सत्यता को उजागर करती है यह कहानी–'सुरंग' । 'सुरंग' कहानी आत्मकथात्मक शैली मैं लिखी गई यथार्थ को उजागर करती हुई कहानी है ।कहानी का शुरुआत संघर्ष से जरूर होता है लेकिन अंततः विजय सत्य की होती है ।दलित शोधार्थी को अंततः पीएचदृडी की उपाधि मिल जाती है ।अतः 'सुरंग' कहानी उच्च शिक्षा के क्षेत्र मैं दलितों को आगे पढ़ने से रोकने के विरूद्ध किए जा रहे षड्यंत्रों को उजागर करती संघर्ष की कहानी है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ.दयानंदबटोहीदृ 'सुरंग' कहानी–संग्रह, प्रकाशक–ज्योत्सनागहलोत, पुराना बाजार, चंद्रपूरा, बोकारो, वर्ष –1995, पृष्ठ सं –08
2. रमणीक गुप्ता, दलित साहित्य विशेषांक–2012,संपादक–जय प्रकाश 'कर्दम',प्रकाशन–साहित्य संस्थान ,गाजियाबाद, पृष्ठसं –30
3. डॉ. हिन्दी दलित साहित्य की कथा यात्रा दृ डॉ जय प्रकाश कर्दम ,डॉ विजय कुमार 'संदेश'–संपादक, प्रकाशक–क्लासिकल पब्लिशिंगकंपनी ,नईदिल्ली ,वर्ष–2009 ,पृष्ठसं दृ 54
4. डॉ. पुरुषोतमसत्यप्रेमी –दलित साहित्य रचना ओर विचार ,आतिश प्रकाशक ,हरि नगर , दिल्ली,वर्ष–1997 ,
5. डॉ. जय प्रकाश कर्दम –दलित साहित्य (वार्षिकी)वर्ष–2012
6. डॉ. जय प्रकाश कर्दम –दलित साहित्य (वार्षिकी) वर्ष–2014
7. प्रमोद कुमार सिन्हा –वरीय सवाद दाता,कोयलंचल –धनबाद ,06 सितंबर 2004,पृष्टसं –04
8. डॉ. शयोराज सिंह बैचेन,आश्वस्त ,वर्ष –नवंबर 2017 ,पृष्टसं–19 प्रकाशक –भारतीय दलित साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश ।

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14